

मूंग में कीट प्रबंधन

(आदित्य रघुवंशी एवं डॉ. जागृति उपाध्याय)

कृषि विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश

संवादी लेखक का ईमेल पता: chourasiyasumit4@gmail.com

भारत में मूंग कम समय के पकने वाली एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। मूंग का उत्पादन खरीफ, रबी और जायद में भी लिया जाता है। मूंग की फसल में विभिन्न अवस्थाओं में अनेक प्रकार के कीट लगने की सम्भावना रहती है। यदि इन कीटों का सही पहचान करके उचित समय पर नियंत्रण कर लिया जाए तो उपज का काफी भाग नष्ट होने से बचाया जा सकता है।

बीन थ्रिप्स या रसचूसक कीट

- बीन थ्रिप्स बहुत छोटे गहरे भूरे रंग के होते हैं। इस कीट के अपरिपक्व व वयस्क अवस्थाएं मूंग के फूलों को पर्याक्रमित करते हैं। इसके प्रकोप से पौधे गहरे हरे रंग के और कमजोर हो जाते हैं। भारी प्रकोप होने पर पत्तियां मुड़ जाती हैं और फूल गिर जाते हैं। इसका प्रकोप शुष्क अवस्था में, विशेष रूप से ग्रीष्म काल में ज्यादा होता है।



प्रबंधन

- नियमित रूप से सिंचाई करें। नीम तेल (3000 पीपीएम) तथा नीम बीज सार (5ल) से छिड़काव करें। बुवाई से पहले बीज का थायोमेथाक्सांम 70 2ह्य (2 मि. ली. प्रति कि. ग्रा. बीज) से उपचार करें। तथा थायोमेथाक्सांम 25 डूखत्र को 0.2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करने से इस कीट को नियंत्रित कर सकते हैं।

सफेद मक्खी

- सफेद मक्खी के शरीर और दोनों पंखों पर सफेद से पीले रंग का मोमी स्राव रहता है। वे अक्सर पत्तियों की निचली सतह पर दिखती हैं। ये गरम और सूखी परिस्थितियों में पनपती हैं। पत्तियों की निचली सतह पर अंडे दिए जाते हैं। नवजात पीले से सफेद रंग के, सपाट, अंडाकार और हल्के-पीले होते हैं। इस कीट की अपरिपक्व व वयस्क अवस्थाएं पत्तियों की निचली सतह से रस चूसती हैं। यह कीट पत्तों पर हनीड्यू उत्सर्जित करते हैं। इस हनीड्यू पर काली फफूंद उगने लगती है जिसके कारण प्रकाश संश्लेषण क्रिया बाधित होती है। जिससे पौधों की वृद्धि रुक जाती है। सफेद मक्खी पीले मोजेक वायरस को भी फैलाती है।



प्रबंधन

- मक्का या ज्वार की फसल मूंग के चारों ओर लगाने से इस कीट का पर्याक्रमन कम होता है। इमिडाक्लोप्रिड 17.8 SL (3 मि.ली. प्रति कि. ग्रा. बीज) से बीजोपचार तथा फसल पर 0.2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

चेपा (माहू)

- माहू छोटे, नरम शरीर के कीड़े हैं। प्रजातियों के आधार पर उनके शरीर का रंग पीला, भूरा या काला होता है। इस कीट के शिशु और प्रौढ़ पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूल-फलियों पर समूह में एकत्रित होकर रस चूसकर उसे कमजोर बना देते हैं। कोमल पत्तियां इनके प्रभाव से सिकुड़ी हुई दिखाई देती हैं। गंभीर संक्रमण से पत्तियां और टहनियाँ मुड़ सकती हैं और पीली पड़ सकती हैं। साथ ही पौधे के विकास को नुकसान हो सकता है।



प्रबंधन

- नीम तेल (3000 पीपीएम) तथा नीम बीज सार (5 प्रतिशत) से छिड़काव करने से चेपा का प्रबंधन किया जा सकता है।

टोबैको कैटरपिलर

- इस कीट की वयस्क पतंगा मटमैले भूरे रंग की होती है, जिसके ऊपरी पंखों पर सफेद रंग की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं होती हैं। निचले पंख सफेद होते हैं। वयस्क मादा अण्डे 200-250 के समूहों में पत्ती की निचली सतह पर देती है। एक वयस्क मादा लगभग 1200-2000 अण्डे देती है। इस कीट की छोटी इलियाँ मटमैले हरे रंग की होती हैं और प्रारंभिक अवस्था में पत्तियों पर समूह में रहकर हरे भाग को खुरच-खुरच कर खाती हैं। परिणामस्वरूप ग्रसित पत्तियाँ जालीदार हो जाती हैं। पूर्ण विकसित इलियाँ हरे, भूरे या कथई रंग की होती हैं। शरीर के प्रत्येक खण्ड के दोनों ओर काले तिकोने धब्बे इसकी विशेष पहचान हैं। बड़ी इलियाँ पूरे खेत में फैल जाती हैं एवं पत्तियों को खाकर फसल को नुकसान पहुंचाती हैं।



प्रबंधन

- इस कीट के नवजात इलियों को इक_ा करके उन्हें नष्ट कर देते हैं। प्रबंधन के लिए क्लोरानट्रानिलिप्रोल 18.5 SC का 100 मिली. प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव कर सकते हैं।